NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

सफेद बैंगन की खेती से सम्बंधित जानकारी

विशाल पाल[*1], कुमारी नेहा सिन्हा[2] एवं मिथिलेश कुमार वर्मा[3]

परिचय:

सफेद बैंगन (White Brinjal) एक विशेष किस्म का बैंगन है, जो अपने सफेद रंग और मुलायम स्वाद के लिए प्रसिद्ध है। यह बैंगन सामान्य बैंगन की तरह ही सोलनैसी (Solanaceae) कुल से संबंधित है। इसका उपयोग सब्ज़ी, भरता और अचार बनाने में किया जाता है। इसमें कैल्शियम, आयरन, विटामिन और एंटीऑक्सीडेंट पाए जाते हैं, जो स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होते हैं। सफेद बैंगन की खेती मुख्यतः उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में की जाती है।

प्रजातियाँ एवं किस्में सफेद बैंगन

- **पी.पी.एल. (PPL)** – गोल आकार का सफेद बैंगन, घरेलू उपयोग हेतु उपयुक्त।
- **केएस-331 (KS-331)** – अंडाकार फल, सफेद रंग, रोग प्रतिरोधक क्षमता अच्छी।
- **के.एस.एस.-9 (KSS-9)** – छोटे आकार के फल, आकर्षक सफेद रंग।
- **सफेद गुलेर (Safed Guler)** – मध्यम आकार के, अंडाकार, स्थानीय किस्म।
- **आई.सी. - 185** – रोग सहनशील और छोटे अंडाकार सफेद फल।

विशेषताएँ

- सफेद बैंगन का स्वाद हल्का और मुलायम होता है।
- इसमें नाइट्रोजन की मात्रा कम तथा औषधीय गुण अपेक्षाकृत अधिक पाए जाते हैं।
- यह अचार, सब्जी एवं औषधीय उपयोग के लिए उपयुक्त है।

जलवायु एवं मृदा

सफेद बैंगन की खेती के लिए गर्म एवं आर्द्र जलवायु उपयुक्त होती है। इसकी अच्छी वृद्धि 20-30°C तापमान पर होती है। अच्छे जलनिकास वाली दोमट या बलुई दोमट मृदा, जिसका pH 5.5 से 6.5 हो, इसकी खेती के लिए सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है।

बीज उपचार एवं नर्सरी प्रबंधन

सफेद बैंगन की सफल खेती हेतु बीज उपचार और नर्सरी प्रबंधन अत्यंत आवश्यक है। बीजों को बोने से पूर्व 2-3 ग्राम थायरम अथवा कार्बेन्डाजिम प्रति किलोग्राम बीज से उपचारित करना चाहिए ताकि फफूंद जनित रोगों से बचाव हो। नर्सरी की मिट्टी भुरभुरी, उपजाऊ और अच्छी जल निकासी वाली होनी चाहिए। 1 मीटर चौड़ी और 3-4 मीटर लंबी क्यारियाँ बनाकर बारीक गोबर की खाद मिलाएँ। बीजों को कतारों में बोकर हल्की मिट्टी डालें और नियमित सिंचाई करें। स्वस्थ पौध 25-30 दिन बाद रोपाई हेतु तैयार हो जाती है।

रोपाई की विधि सफेद बैंगन

सफेद बैंगन की रोपाई के लिए पौध तैयार करने हेतु बीजों को नर्सरी में बोया जाता है। 25-30 दिन बाद

विशाल पाल[*], कुमारी नेहा सिन्हा एवं मिथिलेश कुमार वर्मा
[1]पीएच.डी. बागवानी विभाग (सब्ज़ी विज्ञान), (सैम हिगिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी और विज्ञान विश्वविद्यालय)
[2]सहायक प्रोफेसर डॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्यालय
[3]पीएच.डी. बागवानी विभाग (सब्ज़ी विज्ञान), (सैम हिगिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी और विज्ञान विश्वविद्यालय)

जब पौधे 12-15 सेमी ऊँचे हो जाएँ तो मुख्य खेत में 60×45 सेमी दूरी पर रोपाई करें। स्वस्थ पौध का चयन करें और तुरंत सिंचाई करें।

सिंचाई एवं खाद प्रबंधन

सफेद बैंगन की अच्छी उपज हेतु समय पर सिंचाई एवं उचित खाद प्रबंधन आवश्यक है। रोपाई के तुरंत बाद हल्की सिंचाई करें और उसके बाद 8–10 दिन के अंतराल पर नमी बनाए रखें। फूल व फल बनने की अवस्था में नियमित पानी देना जरूरी है। खाद प्रबंधन हेतु प्रति हेक्टेयर 20-25 टन गोबर की खाद, 100:60:40 NPK किग्रा दें तथा आवश्यकता अनुसार सूक्ष्म पोषक तत्वों का छिड़काव करें।

खरपतवार नियंत्रण

सफेद बैंगन की खेती में खरपतवार नियंत्रण हेतु खेत की नियमित निराई-गुड़ाई आवश्यक है। रोपाई के 20-25 दिन बाद पहली निराई तथा 40-45 दिन बाद दूसरी निराई करनी चाहिए। पालीथीन मल्चिंग एवं प्री-इमर्जेन्स हर्बीसाइड का प्रयोग भी लाभकारी है, जिससे नमी संरक्षित रहती है और खरपतवार कम उगते हैं।

रोग एवं कीट प्रबंधन

सफेद बैंगन में प्रमुख रोगों में विल्ट, पर्ण झुलसा तथा कीटों में फल एवं तना छेदक, माहू और सफेद मक्खी हानिकारक हैं। रोग प्रबंधन हेतु रोगमुक्त बीज, उचित फफूंदनाशी का छिड़काव करें। कीट नियंत्रण के लिए नीम आधारित कीटनाशी, फेरोमोन ट्रैप तथा समय पर जैविक एवं रासायनिक दवा का प्रयोग करें।

फसल की तुड़ाई

सफेद बैंगन की तुड़ाई उचित आकार और आकर्षक रंग आने पर करनी चाहिए। फल अधिक पकने न पाए, क्योंकि इससे स्वाद व गुणवत्ता कम हो जाती है। तुड़ाई सुबह या शाम को करनी उपयुक्त रहती है। समय पर तुड़ाई से निरंतर उत्पादन और बाजार में अच्छी कीमत मिलती है।

उपज एवं आर्थिक महत्व

सफेद बैंगन की उपज उच्च होती है और यह कम समय में फल देता है, जिससे किसान अधिक लाभ कमा सकते हैं। इसकी मांग बाजार में लगातार बनी रहती है, विशेषकर सलाद, सब्ज़ी और व्यंजनों में उपयोग के कारण। सफेद बैंगन की पैदावार कम स्थान पर भी संभव है, और इसे विभिन्न जलवायु परिस्थितियों में उगाया जा सकता है। इसका निर्यात भी किया जा सकता है, जिससे विदेशी मुद्रा अर्जित होती है। कुल मिलाकर, सफेद बैंगन किसान के लिए आर्थिक दृष्टि से लाभकारी फसल है।

निष्कर्ष

सफेद बैंगन की खेती में उचित निराई, पोषण, सिंचाई और रोग-कीट प्रबंधन से उपज और गुणवत्ता में वृद्धि होती है। सही समय पर कटाई और संग्रहण से बाजार मूल्य बेहतर रहता है। इसके माध्यम से किसानों को आर्थिक लाभ और सतत उत्पादन सुनिश्चित किया जा सकता है।

NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE